647510 **BRSHinFC507B** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 5 (*CBCS*) Examination

Oct/Nov.- 2024 (Old Course)

HINDI LITERATURE AND LANGUAGE CORRECTION (FOUNDATION-7)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न- १ निम्नांकित प्रश्नों के सूचनानुसार उत्तर दे । (१५)

(१) सूर्य शब्द का समानार्थी शब्द लिखें ।
(२) बिजली शब्द का समानार्थी शब्द लिखें ।
(३) संक्षेपण की व्याख्या लिखिए ।
(४) देशज शब्द के दो उदाहरण दीजिए ।
(५) जिस के सिर पर चंद्र है- शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए ।
(६) पत्रों के कितने प्रकार है ?
(७) अनुवाद शब्द का अर्थ दीजिए ।
(८) हमारे की बाहर जाना है । वाक्य का शुद्ध रूप दीजिए ।
(९) जो सबकुछ जानता है । वह शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए ।
(१०) संक्षेपण के किसी दो गुणों के नाम लिखे ।
(११) साहित्य शब्द की व्याख्या लिखिए ।
(१२) विदेशी शब्द के दो उदाहरण लिखिए ।
(१३) जो अपनी हत्या करता है वह - शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए ।
(१४) दुरिता शब्द का विरुद्धार्थी शब्द दीजिए ।
(१५) जिसकी कोई उपमा न हो - शब्द समुह के लिए एक शब्द दीजिए ।

प्रश्न- २ संक्षेपण का अर्थ बताकर संक्षेपक के गुणों की चर्चा करे । (१५)

अथवा

प्रश्न- २ हिन्दी शब्द समुहों की उदाहरण देकर चर्चा करें ।

प्रश्न- ३ निम्नांकित टिप्पणियों में से किन्ही दो टिप्पणियाँ लिखें । (१५)

(१) अनुवाद के विविध प्रकार ।
(२) आवेदन पत्र का नमूना तैयार करें ।
(३) राष्ट्रीय एकता के लिए हिन्दी भाषा ।
(४) अनुवाद की उपयोगिता लिखे ।

प्रश्न- ४ चेक भुगतान पर रोक लगाने के लिए बैंक मेनेजर को पत्र लिखे । (१५)

अथवा

प्रश्न- ४ सामाजिक निमंत्रण पत्र का नमूना तैयार कीजिए ।

प्रश्न- ५ निम्नांकित परिच्छेद का संक्षेपण तैयार करें । (१०)

शीतल, मंद, सुगंध वायु अपने स्पर्श से सबको सुख और संतोष देती है । वृक्ष स्वयं धूप की तपन सहकर दूसरों को अपनी शीतल छाया से सुख और आनंद देते है । इसी प्रकार परोपकारी मनुष्य अपने सत्कार्यो से सबको सुख देता है । परंतु खड-सृष्टि के पदार्थो और चैतन्य सृष्टि के जीवो में एक बडा भारी अंतर है और वह यह है कि यद्यपि जड सृष्टि के पदार्थ और चैतन्य सृष्टि के जीव, दोनों अपने सदगुणों से दूसरे के लिए एक समाज ही सुखदायक होते है । वृद्ध अपनी शीतजी छाया से दूसरों का संताप दूर करके उनको सुख देता है, परंतु अपनी छाया से उसे स्वयं क्या लाभ होता है? इसी भांति वायु की सुगंध से स्वयं वायु को क्या लाभ पहुँचता है ? परंतु चैतन्य सम्पन्न जीवों की- और विवेक बुद्धि-युक्त मनुष्यों की यह दशा नहीं है । मनुष्य के परोपकार वाले कार्यो से दूसरों को तो सुख होता है किंतु उसके साथ ही- परोपकार करनेवाले को भी संतोष होता है । लूले-लंगडे-अनाथों, निराश्रितों और नाना प्रकार के दु:खो से पीडित मनुष्यों की सहायता करने से इन लोगों को वो आराम पहूँचता है, किंतु इन पर उपकार करनेवाले मनुष्यों को भी एक प्रकार का उद्भव-सुख-संतोष-समाधान प्राप्त होता है ।

****